षष्टम अध्याय

उपसंहार : शिवानी : उपलब्धियाँ और देन भाषा की गरिमा, शैली की मिठास और व्यंग्यार्थ की सारगर्भिता के कारण जिनकी रचनाएँ अपनी अलग पहचान रखती है यह है शिवानी जी । इनके समस्त साहित्य के अध्ययन के पश्चात् हम कह सकते हैं कि शिवानी एक सफल, ईमानदार तथा लोकप्रिय कथा लेखिका है । इनकी कहानी प्राय: जीवन की विशृंखलता, आम्बद्धता व व्यक्तिहीनता पर आधारित होने के कारण वह किसी पूर्व निश्चित उद्देश या आदर्श के लक्ष्य को लेकर ही नहीं चलती अपितु नये भाव बोध एवम् संवेदनाओं के यथार्थ चित्रण द्वारा पाठकों के हृदय पर तदगत् प्रभाव को उत्पन्न करना ही अपना अभीष्ट समझती है । अर्थात् आज के व्यक्ति की लक्ष्यहीनता दिशा शून्यता तथा अस्तित्व हीनता बोधक स्थितियों की सार्थक व यथार्थ अभिव्यक्ति देना ही इन कहानियों का प्रमुख उद्देश्य है साथ साथ नारी जीवन की अभिव्यंजनाओं को समाज के सम्मुख अभिमुख कराती है । उनके उपन्यासों में पहाडी और नगर जीवन से जुडा हुआ नारी जीवन देखने मिलता है । नारी-जीवन पर प्रारंभिक मौलिक कहानी लेखकों में श्री राधिकारमण प्रसाद सिंह है । उनकी "कानों में कंगना" शीर्षक कहानी संवत 1970 में निकली थी । उसमें नारी हृदय की सरलता, भावुकता त्याग परायणता और कष्ट सहिष्णुता का बडा सुन्दर चित्र है ।" ।

। - "हि॰ साहित्य का सुबोध इतिहास"e बाबू गुलाबराय - पृ. 162

नारी जीवन की समस्या के साथ-साथ अवैध सन्तान की समस्या भी अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है । इसके अतिरिक्त कलकत्ता के वेश्या-जीवन पर भी खुलकर प्रकाश डाला है । नारी के विविध परिपार्श्व भी प्रस्तुत किये गये हैं । "सती", "तोप" से लेकर अपना सर्वस्व प्रेमी के चरणों में अर्पित कर स्वयं दोषित बनकर भटकती हुई एक अभागी ग्रामीण हीरावती को भी उभारा गया है । वही नारी जो अपने सगे जुड़वा अपाहिज भाई को भैयादूज के दिन पति द्वारा पागल कह कर भगाता हुआ भी सह लेती है । पति के दुराचरण को चुपचाप सब कुछ सहकर अंत में साध्वी या भिक्षुणी या अपराधिनी बन जाती है । इसके अतिरिक्त नारी का अन्य रूप स्वाभिमान के दर्शन भी उनकी कहानियों में प्राप्त है । "स्वयंसिद्धा", अपराजिता" आदि उसके उदाहरण हैं । आधुनिक नारी के भी रूप प्रस्तुत है । उन्मत्त रूप में प्रेमी के साथ कुछ भी सोचे समझे भागना आजकल के समाज में समस्या बन गई है । इस सामयिक समस्या के दुष्परिणाम भी शिवानी ने बतलाए हैं । "सुरंगमा" की लक्ष्मी कम उम्र में गजानन की बातों में आकर भाग निकलती है । "श्मशान चम्पा" में जूही भी अपने प्रणयी के साथ भागती है लेकिन धोखा खाने के बाद ठोकरें खाती अंत में केबरे डान्सर बन जाती है । वहाँ एक अन्य प्रेमी से भी धोखा खाकर गर्भ - पात करवाती है । प्रेमी के खून करने के आरोप में जेल में भी

जाना पडता है । "भैरवी" में राजेश्वरी तथा "मौसी" में मिसेज वेदी के भी उदाहरण हैं । सीगारेट पीना, नशे की गोलियाँ खाना या शराब पीना भी आधुनिक नारी में व्याप्त है । लेकिन इन सबके लिये जिम्मेदार कौन है ?

शिवानी ने अपने उपन्यास, कहानी एवम् संस्मरणों के द्वारा समाज की कई समस्याओं को उजागर की है । इन समस्याओं के ताने बाने को देखकर शिवानी को नये युग सन्दर्भों की सशक्त समस्यामूलक उपन्यासकार कहा जा सकता है । उनके साहित्य में विभिन्न समस्याओं के साथ साथ पुरातन मानवीय मूल्यों को भी उजागर किया गया है । हमें आज के युग में अपनी रूढियाँ बदलकर नये मानदण्ड स्थापित करने होंगे । पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित समाज में अपने सांस्कृतिक पुरातन मूल्यों का रक्षण करना कहाँ तक संभवित है ? लोकलाज व अपनी मर्यादा का क्या होगा ?

संक्षेप में शिवानी के साहित्य की कथ्य एवं शिल्प की आलोचना करने के पश्चात् यह दृष्टिगत् है कि शिवानी का योगदान सर्वथा मौलिक और विशिष्ट रहा है । शिवानी की अपनी विशिष्ट कथा प्रतिभा है जो प्रायः इससे पूर्व के साहित्यकारों में दृष्टिगत नहीं होती । मन्नू भण्डारी, उषाप्रियंवदा, कृष्णा सोबती, अमृता प्रीतम आदि के साथ शिवानी का नाम भी अधिक लोकप्रियता के शिखर पर है । संस्मरण चित्रण में

भी उनकी लेखनी महादेवी वर्मा की तुलना में स्थान प्राप्त करती है ।

आज के इस संक्रांतिकाल में नारी का नारी होना ही उसकी बडी विवशता है । फिर वे नारी होने के साथ-साथ लेखिका है तो उनकी स्थिति और भी विषम हो उठती है । उनके साथ जुडी हुई अगणित घटनाएँ उसकी अवश स्मृतियाँ, दबी सिसकियाँ कदम कदम पर उनका हाथ थाम लेती हैं । इन सबके बीच एक स्त्री के लिए लेखन-कार्य उतना सुगम नहीं होता, जितना एक पुरुष के लिये होता है ।[1] फिर भी नारी-चित्रण में शिवानी ने पक्षपात नहीं किया । उसके छलनामयी रूप को भी चित्रित करने में शिवानी का संस्कारशील नारी-चित्त विचलित नहीं हुआ ।

टोल्सटोय यदि स्वयं सैनिक न होते तो शायद उनकी "वोर एन्ड पीस" कृति इतनी सशक्त न बन पाती । प्रेमचन्द को ग्राम्य जीवन का इतना अनुभव न होता तो शायद "गोदान" का रूप इतना यथार्थ और जीवन्त नहीं बन पाता । इसी प्रकार शिवानी ने भी जीवन के बदलते हुए मूल्यों को खुली आखों से देखा और भोगा है और अपनी लेखन यात्रा का क्रम इन जीवन संघर्षों के बीच भी संतुलित रखा है । रचना

1 - "चार दिन की " - पृ॰ 9

विधान की दृष्टि से इनकी रचनाओं का एक विशेष ढांचा देखने मिलता है । कथा की नवीनता, घटनाओं की नाटकीयता, वातावरण की सजीवता, भाषाशैली की काव्यात्मकता के साथ-साथ उसमें युगीन समस्याओं का संवेदनापूर्ण चित्रण मिलता है ।

शिवानी जी स्वयं कहती है, - "मेरी कथा यात्रा कितनी सफल रही यह मूल्यांकन मेरे लिए क्या किसी भी लेखक के लिए सम्भव नहीं है । यह मूल्यांकन कर सकता है केवल समय । किन्तु इतना अवश्य सिर उठाकर कह सकती हूँ कि जितना लिखा है, ईमानदारी से लिखा । यथार्थ को धकेल केवल कल्पना के मसिपात्र में लेखनी नहीं डुबोई ।"[1]

शिवानी ने लिखे संस्मरण और रेखाचित्र तथा यात्रा-वृत्त भी एक अनमोल निधि हैं । राजनीति, अराजकता, आंदोलन, दहेज प्रथा, आतंकवाद, तस्करी, आज की शिक्षा-प्रणाली एवम् विद्यार्थी तथा होली, दीपावली इद जैसे त्यौहारों का अंकन बेगम अख्तर आदि के रेखाचित्र आदि उनके प्राचीन संस्कृत साहित्य के ज्ञान और सुसंस्कृत व्यक्तित्व का एवं प्रतिभा का नया आयाम है । इन सबके द्वारा भी वर्तमान समस्याओं की ओर अंगुली निर्देश किया है ।

1 - "जालक" - शिवानी - पृ॰ 134

अंत में हम यह कह सकते हैं कि शिवानी एक आदर्श साहित्य-कार के दायित्व को जानती है । सस्ती लोकप्रियता के लिये उन्होंने कभी प्रयत्न नहीं किया है । वे अपने कर्तव्य के प्रति सदैव सजाग रही है । कथा और शिल्प की दृष्टि से उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य की एक उपलब्धि हैं । उनके प्रादान्य का सही मूल्यांकन आलोचक नहीं आनेवाला समय ही करेगा ।